

तारीख

वृत्त

वृत्त या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज

गण
अप्र
वृत्त


10.11.20

पत्राचार प्रमाण उपर की प्रमाण
 का कमजोर किया जागीर का एक कर्मचारी
 के साथ अर्चना पत्र U/S. 212 R.O. Act 1955
 प्रस्तुत किया है, कि जागीर का वृत्त वीरम की
 इतिहास नं. 494, 495 आवधिक खसरा नम्बर 405
 404 पर कर्ण प्रपत्र बाँसी के समय से ही शक्ति
 प्राप्त है। यह भी उक्त की जागीर एवं अर्चना कंपनी
 के समय विगत-विगत आयातों से उक्त इतिहास
 संबंधित वाद विचारणीय रहे हैं। पत्र के अंत
 में विनिश्चालन का उक्त इतिहास पर खसरा नं. 405
 खींचता गया है। कंपनी उक्त इतिहास पर खसरा
 नं. 404 का उक्त है। जबकि जागीर की
 मुकाबला नहीं दिया गया है। जागीर के
 कंपनी के पत्र से खसरा नं. की सरकारी भी नहीं
 दी है। कंपनी के अधिकारियों के धर्म की
 है, कि वे उक्त इतिहास पर खसरा नं. का
 रहे, जबकि मोठे पर जागीर की कसब
 खड़ी हुई है।

अन्त में उक्त अर्चना कंपनी के विरुद्ध
 अर्चना नोदेस का मुकदमा चला
 गया है अर्चना द्वारा कर्मचारी नर्म के
 उक्त खसरा नं. 404, 405 पर मुकाबला निर्धारण
 का निर्णय सीमान्त जिला अदालत मंडल कोरा द्वारा
 दि. 25.4.98 को किया गया। उक्त निर्णय की
 अपील भारतीय न्यायालय R.O. कोरा दि.
 13.8.98 एवं भारतीय न्यायालय मंडल द्वारा
 दिनांक 28.2.2003 को खसरा नं. की धर्म की

सप्लाय्ड अर्चना

तारीख हुकम	हुकम या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज	नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुकम की तामील में जारी हुए
	<p>अध्यायी कंपनी के लक्ष्मीगढ़ एवं नारायण लक्ष्मीगढ़ राज्य मन्त्री के विक्रय एक वाद भारतीय विधिक न्यायालय वामराज्यमन्त्री से प्रेष किया था, जिसमें निम्न क्रि. 21.10.2001 की अध्यायी कंपनी के प्रेष के आदेश जारी किया हुआ था। वर आदेश वर्तमान में प्रकाशित है।</p> <p>अध्यायीगढ़ को लक्ष्मीगढ़ ख. नं. 496 एका 4.27 है. पर खनन कार्य नहीं कार्य रहा। चार्ल्स इस हेतु कॉन्ट्रैक्ट प्रेष के माफिक यह आदेश प्रेष किया है, जो कठिनाई खोज है। लक्ष्मीगढ़ का किसी एका का स्वामित्व व राक्षस नहीं है।</p> <p>अवकाश की छील विहाय अधिवक्ता जमीन गण को दी जाऊ वर विहाय अधिवक्ता उत्तरपक्ष सुनी गई।</p> <p>राज्य वर विहाय अधिवक्ता जमीन का क्रम है, कि इनावा A. 5. 1. बनाम देवकाय से लक्ष्मीगढ़ जिलादी की कंपनी जमीन को बेदावत करने पर आसारा है। इस को कॉन्ट्रैक्ट प्रेष प्रेष कर रखा है। इसके निम्नार्थ पर इस बेदावत नहीं कर सकते। कृष्ण मेघ है, यह प्रेष कर आ रहे है। वकी कंपनी एकावसाही है, एम बेदावत कर सकती है। मद्र नम्बर 4 से माली प्रेष भारत का अंकन है, जो जमीन के प्रेष नहीं वर्तमान में एम खेती कर रहे है। एम बेदावत नहीं किया जावे। इसके विपरीत विहाय अधिवक्ता</p>	


 उपखण्ड अधिकारी
 जे. ए. ए. ए.

तारीख
हुकम

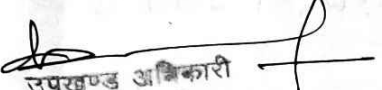
हुकम या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज

नम्बर य ता...
अहकाम य...
हुकम की ता...
में जारी...

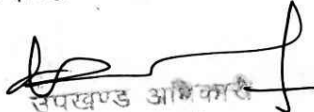
वादी/अध्यायी का कथन है, कि तूथि सिवाम
चक्र ही 183 का होवा किया हुकापी सुलक
घासी इनका प्रवण नहीं था। बादगत शक्ति
ता मुकावजा ग्राम पंचायत को दिया जा
चुका ही किसी कोलकृति को अनुलोष नहीं
दिया जा सकला। इनके द्वारा वादगत शक्ति के
मोड़ से हिम्स पर अनधिकार कलना का (वा
है, इसकी आड़ में धरी शक्ति पर अनधिकार
कलना कलना चारही की खनन नाम कलता है,
वा अध्यायी का मुकाम होगा। मोड़ पर खनन
कर्म ही रहा ही हम इन्हें बेखतर नहीं कर रहे ही
यदि ऐसा होता ही हम 183 का होवा पर्याप्त पाती
भविष्यारी का जोखिम कलना जात्र की बेखतर नहीं
ही अलग-ग. इ. धारिक की पाती

रीपीट में विडान अधिवक्ता अधीनता का
कथन है, कि प्रवण में नाम रकी रहा भी इतकाल
तन्वीक हुका ही सारे लक्ष्य वात्सल्य में लक्ष्य
होगी तब तक इन्हें पाबंद किया पाती
हम अप्रवीथ सति ही सक्ती थी त. इ. गणी
कलती

बाद बरस कलना का आधोपान्त जलम
अवनातक एवं मनक किया। अधीनता के अधीनता
पथ के लक्ष्य, वात्किल अनुलोष कलती के
अबाव, परसकाल गरा प्रसुता स्थावपात पर
सम्बन्ध विचार किया गया। बरस विधान
अधिवक्ता उभयपक्ष पर मनक किया।


उपखण्ड अधिकारी
रामगंजमण्डली

तारीख हुकम	हुकम या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज	नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुकम की तामील में जारी हुए
	<p> हल्क मन्तक जमावन्दी वादगटो इति ह्यो अलरानिम खण्डे: 494-495 मामी खेण लमरा वासिन्दा खोली 510 भाखाम होम प्रजत नाम रकी थी खखला 2054-57 जमावन्दी में साबिक ख.नं. 808 व 809 पर ख.नं. $\frac{808}{931}$ व $\frac{809}{931}$ पर M.S.Z. कंपनी के खनन कार्य की अनुमति का अंश थी हल्क करे मिमान साबिक ख.नं. 808 व 809 व 812 व 813 व 814 व 815 पैसुद किया जारा प्रमाठित थी शर्मीगत के नाम दर्ज नामांके 300 के भीमान निमा कलकर मरी होरा के कोदेस रिनेक 30-4-2001 के निमा का दिया जाना प्रमाठित होता थी हल्क निर्मि भीमान निमा कलकर मरी कोरा रिने 20-4-98 के अन्तक नठित इति ख.नं. $\frac{808}{931}$ व $\frac{809}{931}$ पर M.S.Z. कंपनी के धारा 89 (3-4-5) के अन्तक खनन कार्य की लीकल जारी की गई है उन्त निर्मि की कपीत माननीय न्यायालय R.A.A. होरा के ग्राम पंचायत डाला की गई निमि मुआवज रास ग्राम पंचायत को दिया जाना तस किया गया। धांसी इतर के मुकाबल शरित का हकदार नहीं माना। उन्त निर्मि रिने 13-8-98 के जारी किया गया। माननीय न्यायालय R.A.A. होरा के निर्मि रिनेक 13-8-98 की कपीत शर्मीगत डाला माननीय राजस्व मंडल में प्रस्तुत की किल माननीय राजस्व मंडल मि.नं. 43/2002/L.A. होरा निर्मि रिनेक 28-2-03 के खर्माण का दिया थी प्रथम का शर्मीगत हलक धांसी के वैद्य वागीपान लम नहीं दुस्ये, मोटे वादगटो इति शर्मीगत के </p>	

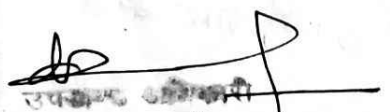

 उपखण्ड अधिकारी
 जयपुर


तारीख
हुकम

नाम रक्त नली की कला अकारण के विवेचन पर
पाया जाता है, कि प्रयोग का प्रथम प्रथम
अकारण नहीं है।

अकारण वगैरह शक्ति का अकारण रूपहीनता
मुआवजा विधि अनुसार तय कवा कर संबंधित
प्राम पंचायत को सुगतान कवा कर खनन
कार्य किया जा रहा है। उक्त खनन सलमति
नई बार व्यापिक प्रक्रिया से उक्त युक्ति की
मोह पर अविश्वस्य अति पर खनन कार्य किया
जाता अवगत कपाया है। यदि विधिक प्रक्रिया
हाल प्राल अविश्वस्य (खनन कार्य) से अकारण
की रोक जाता है, तो इससे अकारण की
ही अविश्वस्य होगी। प्रयोग को अविश्वस्य
होगा तय नहीं है। अविश्वस्य का संकुलन
अकारण के पास से पाया जाता है।

अकारण अकारण वगैरह शक्ति का विधिक
के सुसंगत आवधारों के तहत मुआवजा
तय कवा कर खनन (वीकलि) प्राल करने
के उपरान्त खनन कार्य कर रहे हैं, यदि
उन्हे जरिये आदेश पावेक किया जाकर
खनन कार्य से रोक जाता है, तो इससे
प्रयोग को किसी प्रकार की शक्ति
नहीं हो रही है, इससे विपरीत अकारण
की ऐसी शक्ति संभाव्य है, जिसका आतपन
मुआ के रूप में संभव नहीं हो सकता।


उपस्थित अधिकारी
समानाजकरी

तारीख हुकम	हुकम या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज	नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुकम की तामील में जारी हुए
	<p>इस प्रकार सुविधा का सेलुलन सही अपीलित शक्ति प्रयोगों की विलम्ब - अप्रार्थी के पक्ष में प्रबल थी प्रार्थीगणों को या अप्रार्थी को वादगल शक्ति पर क्या खतब आता है? या लेने चाहिए इसका विनिश्चय शब्दाद में सम्पूर्ण साम्य तथा समुचित परीक्षणोपरान्त विधि अनुसार मेरीर पर होना है, न कि शठ पक्ष या इसके प्रभाव को बाधा पर।</p> <p>अतः सुनावणुणों के बाधा पर यह लय है, कि प्रार्थना पक्ष प्रार्थीगणों द्वारा 212 R.T. 1987 की शर्तमय को कुलीफल नहीं कराया अतः शठ पक्ष प्रार्थीगणों खारिज किया जाता है पनावनी फैलन सुमाए की जाकर शब्दाद के साथ संलग्न रहे।</p> <p>निर्णय आज दिनांक 10.11.2020 को मेरे द्वारा लिखाया जाकर विद्वत न्यायालय में सुनाया गया।</p> <p style="text-align: center;">  (D. S. S.) I. A. S. एपेलेट अफिसरी सुप्रीम कोर्ट </p>	